اٰیاتها ١٩ | ٨٢ سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّیَّةٌ ٨٢ | ركوعها ١

सूरए इन्फ़ितार मक्किय्या है, इस में उन्नीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۙ﴿۱﴾ وَ اِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۙ﴿۲﴾ وَ اِذَا الْبِحَارُ

जब आस्मान फट पड़े और जब तारे झड़ पड़ें और जब समुन्दर बहा

فُجِّرَتْ ۙ﴿۳﴾ وَ اِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۙ﴿۴﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَ

दिये जाएं[2] और जब क़ब्रें कुरेदी जाएं[3] हर जान जान लेगी जो उस ने आगे भेजा[4] और

اَخَّرَتْ ؕ﴿۵﴾ یٰۤاَیُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِیْمِ ۙ﴿۶﴾ الَّذِیْ

जो पीछे[5] ऐ आदमी तुझे किस चीज़ ने फ़रेब दिया अपने करम वाले रब से[6] जिस ने

خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۙ﴿۷﴾ فِیْۤ اَیِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ؕ﴿۸﴾ كَلَّا بَلْ

तुझे पैदा किया[7] फिर ठीक बनाया[8] फिर हमवार फ़रमाया[9] जिस सूरत में चाहा तुझे तरकीब दिया[10] कोई नहीं[11] बल्कि

تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّیْنِ ۙ﴿۹﴾ وَ اِنَّ عَلَیْكُمْ لَحٰفِظِیْنَ ۙ﴿۱۰﴾ كِرَامًا كَاتِبِیْنَ ۙ﴿۱۱﴾

तुम इन्साफ़ होने को झुटलाते हो[12] और बेशक तुम पर कुछ निगहबान हैं[13] मुअ़ज़्ज़ज़ लिखने वाले[14]

یَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۱۲﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِیْ نَعِیْمٍ ۚ﴿۱۳﴾ وَ اِنَّ الْفُجَّارَ

कि जानते हैं जो कुछ तुम करो[15] बेशक नेकोकार[16] ज़रूर चैन में हैं[17] और बेशक बदकार[18]

لَفِیْ جَحِیْمٍ ۚۖ﴿۱۴﴾ یَّصْلَوْنَهَا یَوْمَ الدِّیْنِ ﴿۱۵﴾ وَ مَا هُمْ عَنْهَا بِغَآىٕبِیْنَ ؕ﴿۱۶﴾

ज़रूर दोज़ख़ में हैं इन्साफ़ के दिन उस में जाएंगे और उस से कहीं छुप न सकेंगे

1 : सूरए "इन्फ़ितार" मक्की है, इस में एक रुकूअ़, उन्नीस आयतें, अस्सी कलिमे, तीन सो सत्ताईस हर्फ़ हैं। **2 :** और शीरीं व शोर (मीठे और कड़वे) सब मिल कर एक हो जाएं। **3 :** और उन के मुर्दे ज़िन्दा कर के निकाले जाएं। **4 :** अ़मले नेक या बद **5 :** छोड़ी, नेकी या बदी और एक क़ौल येह है कि जो आगे भेजा उस से सदक़ात मुराद हैं और जो पीछे छोड़ा उस से मीरास। **6 :** कि तू ने बा वुजूद उस के ने'मतो करम के उस का हक़ न पहचाना और उस की ना फ़रमानी की **7 :** और नेस्त से हस्त किया। **8 :** सालिमुल आ'ज़ा सुनता देखता **9 :** आ'ज़ा में मुनासबत रखी **10 :** लम्बा या ठिंगना, ख़ूब रू, या कम रू, गोरा या काला, मर्द या औ़रत **11 :** तुम्हें अपने रब के करम पर मग़रूर न होना चाहिये **12 :** और रोज़े जज़ा के मुन्किर हो **13 :** तुम्हारे आ'माल व अक़्वाल के और वोह फ़िरिश्ते हैं **14 :** तुम्हारे अ़मलों के **15 :** नेकी या बदी, उन से तुम्हारा कोई अ़मल छुपा नहीं। **16 :** या'नी मोमिनीन सादिक़ुल ईमान **17 :** जन्नत में **18 :** काफ़िर।

www.dawateislami.net

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٨﴾

और तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन फिर तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ؕ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿١٩﴾ ع

जिस दिन कोई जान किसी जान का कुछ इख़्तियार न रखेगी[19] और सारा हुक्म उस दिन अल्लाह का है

اٰياتها ٣٦ سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ ٨٣ ٨٦ رکوعها ١

सूरए मुत़फ़्फ़िफ़ीन मक्किय्या है, इस में छत्तीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ﴿١﴾ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ﴿٢﴾

कम तोलने वालों की ख़राबी है वोह कि जब औरों से माप (नाप कर) लें पूरा लें

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ﴿٣﴾ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ

और जब उन्हें माप या तोल कर दें कम कर दें क्या उन लोगों को गुमान नहीं कि उन्हें

مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿٤﴾ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥﴾ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦﴾

उठना है एक अ़ज़मत वाले दिन के लिये[2] जिस दिन सब लोग[3] रब्बुल आ़लमीन के हुज़ूर खड़े होंगे

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ﴿٧﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ﴿٨﴾

बेशक काफ़िरों की लिखत[4] सब से नीची जगह सिज्जीन में है[5] और तू क्या जाने सिज्जीन कैसी है[6]

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٠﴾ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ

वोह लिखत एक मोहर किया नविश्ता (तह़रीर नामा) है[7] उस दिन[8] झुटलाने वालों की ख़राबी है जो इन्साफ़ के

19 : या'नी कोई काफ़िर किसी काफ़िर को नफ़्अ़ न पहुंचा सकेगा। (خازن) **1 :** "सूरए मुत़फ़्फ़िफ़ीन" एक क़ौल में मक्किय्या है और एक में मदनिय्या और एक क़ौल येह है कि ज़मानए हिजरत में मक्कए मुकर्रमा व मदीनए त़य्यिबा के दरमियान नाज़िल हुई, इस सूरत में एक रुकूअ़, छत्तीस आयतें, एक सो उन्हत्तर कलिमे और सात सो तीस ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जब मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो यहां के लोग पैमाने में ख़ियानत करते थे, बिल ख़ुसूस एक शख़्स अबू जुहैना ऐसा था कि वोह दो पैमाने रखता था लेने का और, देने का और। उन लोगों के ह़क़ में येह आयतें नाज़िल हुईं और उन्हें पैमाने में अ़द्ल करने का हुक्म दिया गया। **2 :** या'नी रोज़े क़ियामत, उस रोज़ ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब किया जाएगा। **3 :** अपनी क़ब्रों से उठ कर **4 :** या'नी उन के आ'माल नामे। **5 :** सिज्जीन सातवीं ज़मीन के अस्फ़ल में एक मक़ाम है जो इब्लीस और उस के लश्करों का मह़ल है। **6 :** या'नी वोह निहायत ही होल व हैबत का मक़ाम है। **7 :** जो न मिट सकता है न बदल सकता है। **8 :** जब कि वोह नविश्ता (लिखा हुवा) निकाला जाएगा।

www.dawateislami.net